IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों में संस्थागत दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

**निर्देशिका**

**डॉ. मनीष कुमार सैनी**

**असिस्टेंट प्रोफेसर**

**प्रस्तुतकर्त्री**

**नेहा झिरवाल**

**एम.एड.छात्रा**

**सारांश –**

व्यक्ति समाज की इकाई होने के कारण उसका आत्म प्रकाशन समाज से प्रभावित होता है और व्यक्ति की सामाजिक क्रिया समाज में ही संभव है। अतः व्यक्ति के समाज में जितने संतुलित सामाजिक सम्बन्ध होगें उतना ही उसका मानसिक संतुलन अच्छा होगा। यदि मानसिक संतुलन अच्छा नहीं है, तो मानसिक तनाव, दण्ड, भय निराशा, विद्रोही की भावना पनपती है जिनके कारण व्यक्ति अनेक प्रकार के दबाव महसूस करने लगता है और उसके बौद्धिक स्तर की तुलना में न्यून सम्प्राप्ति किसी सजग अध्यापक के लिए चिन्ता का विषय हो सकती है इसी के फलस्वरूप वह बालक के परिवार के बारे में एवं उसके व्यक्तित्व पाठ्यक्रम अध्ययन, अध्यापन प्रणाली तथा स्वयं अपने जीवन दर्शन या मूल्य आत्मावलोकन करता है इसीलिए शिक्षक को बालकों के व्यक्तित्व के विकास एवं चरित्र निर्माण के लिए इनकी पारिवारिक स्थिति को ध्यान में रखना चाहिए। प्रायः हम देखते है कि कुछ विद्यार्थी अमीर होते है।

**प्रस्तावना –**

ठण्च्ण्स्ण्

ठमसवू जैम च्वअमतजल स्पदम. ज्मतउ वितसमअमसे वि प्दबवउम इमसवू जीम च्वअमतजल जैतमेावसकण्

गरीबी को आर्थिक स्थितियों की कमी के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है। इसमें रूपये तथा सफलतापूर्वक जीने के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की कमी दोनों को शामिल किया जाता है जैसे कि भोजन, पानी, आवास, कपड़ा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि।

गरीबी रेखा वह न्यूनतम स्तर होता है जो कि किसी देश में जीवनयापन करने के लिए पर्याप्त साधनों को खरीद सकने की क्षमता से कम होता है। एक औसत व्यस्क जो कुछ भी अपनी आवश्यकताओं को प्राप्त करने हेतु कुल किमत चुकाता है, उसी के आधार पर गरीबी का निर्धारण किया जाता है। यह विचारधारा आवश्यकता आधारित मूल्यांकन से प्रभावित होती है, जो कि न्यूनतम खर्चे को आधार

बनाकर तय की जाती है। जिससे कि किसी जीवन को सही स्तर पर जिया जा सके। भारत में गरीबी का आँकड़ा विश्व के कुल गरीबों की 1/3 जनसंख्या की यहां उपस्थिति के साथ अपने उच्च स्तर पर है।

**समस्या का औचित्य –**

सभी व्यक्ति एक स्वभाव के नहीं होते, एक व्यक्ति एक के प्रति अनुराग व्यक्त करता है, तो यह आवश्यक नहीं वह दूसरे व्यक्ति के प्रति अनुराग व्यक्त करे ऐसा व्यवहार होने के कई कारण हो सकते है। व्यक्ति के परिवार में तनाव या परिवार से भय या जहां अध्ययन कर रहा है या उससे सम्बन्धित कोई चिन्ता या दबाव।

वर्तमान युग जटिलताओं का युग है। जिसमें मनुष्य कोई ना कोई पक्ष हमेशा कमजोर रहता है जैसे – मानसिक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक इन सभी पक्षों में समाज में सामंजस्य बनाये रखने के लिए अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है। अच्छा मानसिक स्वास्थ्य स्वस्थ व्यक्तित्व को परिलक्षित करता है, जिससे व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्ति समाज की इकाई होने के कारण उसका आत्म प्रकाशन समाज से प्रभावित होता है और व्यक्ति की सामाजिक क्रिया समाज में ही संभव है।

**तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –**

**(1.) बी. पी. एल. परिवार :–** बीपीएल परिवार से तात्पर्य उन गरीब लोगों के समूह से है जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे है, अर्थात भोजन कपड़ा आवास शिक्षा आदि मूलभूत सुविधा से वंचित परिवार को बीपीएल परिवार कहतें है।

**(2) संस्थागत दबाव :–** संस्थागत दबाव से तात्पर्य जहाँ विद्यार्थी अध्ययन कर रहा है, वहाँ उसे किसी प्रकार तनाव, चिंता, भय, घृणा द्वैष या विद्यालय के प्रति किसी प्रकार दबाव हो उसे संस्थागतदबाव कहते है।

**(3) शैक्षिक उपलब्धि :–** शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है ज्ञान अथवा निपुणता, जिसका प्रमाण विद्यालय में प्राप्त अंको से किया जाता है।

**शोध के उद्देश्य –**

1. बी.पी.एल परिवार के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संस्थागत दबाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. बी. पी. एल परिवार के सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के संस्थागत दबाव का अध्ययन करना।

3. बी.पी.एल परिवार के गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के संस्थागत दबाव का अध्ययन करना।

4. बी.पी.एल परिवार के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. बी.पी.एल परिवार के सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

6 बी.पी.एल. परिवार के गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

**,शोध के परिकल्पना –**

1. बी.पी.एल परिवार के सरकारी एवं गैर विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संस्थागत दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2 बी.पी.एल परिवार के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के संस्थागत दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. बी.पी.एल. परिवार के गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के संस्थागत दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. बी.पी.एल परिवार के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. बी.पी.एल. परिवार के सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. बी.पी.एल. परिवार के गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**शोध की विधि –**

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**जनसंख्या –**

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –**

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय की 80 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

**शोध में प्रयुक्त उपकरण –**

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

**सांख्यिकीय प्रविधियाँ –**

प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकी के रूप में निम्न का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. टी परीक्षण
3. टी मूल्य

**शोध का परीसीमांकन –**

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन जयपुर जिले के 80 विद्यार्थियों पर किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों को शामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में बी.पी.एल. परिवार के 40 छात्र एवं 40 छात्राओं को शामिल किया गया है।

5. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है।

**आँकड़ों का विश्लेषण –**

**माध्यमिक स्तर पर छात्रों एवं छात्राओं के स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता**

बी.पी.एल. परिवार के गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

| विद्यार्थियों के प्रकार | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी मान |
|---|---|---|---|---|
| छात्र | 20 | 63.00 | 13.08 | 0.49 |
| छात्रा | 20 | 65.00 | 12.45 | |

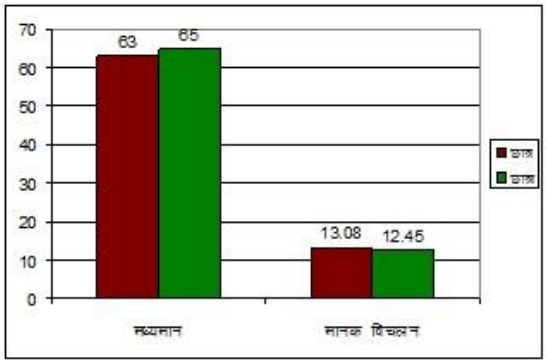


बी.पी.एल. परिवार के गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 63.00 व छात्राओं के संस्थागत दबाव का मध्यमान 65.00 है एवं मानक विचलन क्रमशः 13.08 व 12.45 है। गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र व छात्राओं के संस्थागत दबाव के मध्य सार्थकता अन्तर ज्ञात करने पर टी परीक्षण 0.49 प्राप्त हुआ। स्वतन्त्रत के अंश कि त्र (20+20–2) त्र 38 प्राप्त हुआ। इस आधार पर टी मूल्य के लिए सारणीगत मान 0.01 एवं 0.05 स्तर पर देखे गये जो क्रमशः 2. 71 एवं 2.02 है, जो कि टी मूल्य की गणना द्वारा प्राप्त मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना सार्थकता के दोनो स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

**शोध निष्कर्ष –**

प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के बी.पी.एल. परिवार के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के संस्थागत दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।

इस शोध हेतु संकलित आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

बी. पी. एल. परिवार के गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनतर् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**सुझाव –**

1. प्राथमिक स्तर तथा महाविद्यालय स्तर पर भी संस्थागत दबाव व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोधकार्य को राजस्थान के केवल झुन्झुनूं जिले तक सीमित रखा गया है, अग्रिम शोध के लिए राजस्थान के अन्य शहरों के विद्यालय को लिया जा सकता है।

3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों को लेकर भी अध्ययन किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने केवल 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श लेकर अध्ययन किया है। अग्रिम शोध में इसकी संख्या बढ़ाई जा सकती है।

5. भावी शोध संस्थागत दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के अलावा सामाजिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य को लेकर किया जा सकता है।

6. भावी शोध बी.पी.एल. परिवार के विद्यार्थियों को छोड़कर, अनुसूचित जाति या जनजाति अथवा सामान्य या पिछड़ी जातियों के विद्यार्थियों के ऊपर किया जा सकता है।

7. अग्रिम शोध सामाजिक व आर्थिक स्तर पर भी किया जा सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची –**

कुमार नरेश : ''राष्ट्रीय शिक्षा'' विक्रय प्रकाशन, दिल्ली

कुलश्रेष्ठ एस. पी. : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

गुप्ता एस. पी. गुप्ता : ''साख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन अलका इलाहबाद

गुप्ता रेनू : ''सामाजिक अध्ययन शिक्षण की विधियाँ एवं प्रतिमान'' दोआब बुक हाऊस, लुधियाना